विकास प्रशासन और लोक प्रशासन

विकास प्रशासन लोक प्रशासन ही है, परन्तु कुछ भिन्नता के साथ। लोक प्रशासन में कई तरह के कार्यों का निष्पादन होता है किन्तु सभी से विकास की उतनी गहरी अनुभूति नहीं होती। उदाहरण के लिए, पुलिस और राजस्व प्रशासन लोक प्रशासन के अभिन्न अंग हैं किन्तु इनसे 'विकास' की अनुभूति नहीं होती।

विकास प्रशासन लोक प्रशासन का ही अंग है परन्तु इसका ध्यान प्रगतिशील, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के हेतु सरकार द्वारा प्रभावित परिवर्तन (Government Influenced Change) लाने पर केन्द्रित रहता है। वाईडनर के शब्दों में, “विकास प्रशासन एक कार्योन्मुख और उद्देश्योन्मुख प्रशासनिक प्रणाली है।" यदि हम प्रशासनिक संरचना को ध्यान में रखें तो हम कहेंगे कि विकास प्रशासन योजना आयोग, राष्ट्रीय विकास परिषद्, विकास निगम तथा इसी तरह के नवीन अभिकरणों की रचना करके विकास कार्यों को करता है।

लोक प्रशासन और विकास प्रशासन में विरोध नहीं है। विकास प्रशासन के लिए लोक प्रशासन के अन्तर्गत उपयुक्त अभिकरणों, विभागों और पदों की रचना की जाती है। भारत में जिला ग्रामीण विकास अभिकरण (D. R. D. A) तथा विकास अधिकारी (B. D. O.) के पद कुछ इसी प्रकार के हैं। लोक प्रशासन के अभिकरणों एवं पदों का विकास प्रशासन हेतु पुनर्निर्माण (Refashioning) किया जाता है। भारत में कलक्टर के पद का रूपान्तरण जिला विकास अधिकारी के रूप में कर दिया गया है। संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि विकास प्रशासन की वजह से लोक प्रशासन की संरचना में सुधार और परिवर्तन करने पड़ते हैं। विकास प्रशासन प्रशासन के सभी स्तरों पर लोक सेवाओं की अभिवृत्तियों, व्यवहार, अभिमुखीकरण तथा दृष्टिकोण में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन की मांग करता है। " विकास प्रशासन की आवश्यक शर्तें

विकास प्रशासन राष्ट्रीय आय बढ़ाने की दिशा में नियोजन, आर्थिक उन्नयन, साधनों के कुशल आवंटन तथा संचारण के हेतु उचित व्यवस्था स्थापित करना चाहता है। अत इसकी निम्नलिखित पूर्वापेक्षाएं हैं

राज्य के निरन्तर बढ़ते हुए कार्यों के साथ विकास क्षेत्र में प्रशासन की भूमिका बढ़ती जाएगी। सरकार समस्त विकास प्रक्रिया को निर्देशित करेगी।सरकारी कार्यों में निरन्तर बढ़ती हुई विविधता के

कारण प्रशासनिक क्रियाकलाप

शनैः शनैः

जटिलतम और तकनीकी होते जाएंगे। 4. सरकारी कार्यों की जटिलता बढ़ने से विशेषज्ञों द्वारा

कार्यों का निष्पादन करने की प्रवृत्ति का बढ़ना ।

5. प्रशासन के सभी स्तरों पर नेतृत्व प्रदान करने वाले

व्यक्तियों में सेवा की भावना तथा समर्पण का जोश

होना चाहिए। 6. प्रशासन में तकनीकी परिवर्तनों को समझने और

अपनाने की क्षमता होनी चाहिए। 7. प्रबन्ध में प्रशासनिक सुधार और संशोधनों पर अधिक बल दिया जाएगा।

8. प्रशासन और जनता के मध्य सहयोग और विश्वास की भावना रहनी चाहिए।

9. विकास प्रशासन के लिए स्थानीय जरूरतों,

अपेक्षाओं और मांगों का ज्ञान रखना अत्यन्तअनिवार्य है क्योंकि इस प्रशासन में नियोजन के

अधिकांश कार्य स्थानीय स्तर पर किए जाते हैं। 10. निर्णय लेने वाले संगठनों को लचकदार और कल्पनाशील होना पड़ेगा।

11. प्रशासनिक तथा प्रबन्धकीय उन्नयन पर अत्यधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

12. राजनीतिक प्रक्रिया को प्रभावित करने का प्रशासनिक प्रयास जारी रहेगा। प्रशासन के राजनीतिक और कार्यकारी खण्डों के बीच पर्याप्त भागीदारी होनी चाहिए।

13.

विकास प्रशासन की प्रक्रिया में कार्मिकों के प्रशिक्षण

पर अनवरत जोर दिया जाना चाहिए। 14. विकेन्द्रीकरण को निरन्तर लागू करने से क्षेत्र स्तर (स्थानीय) की विकास एजेन्सियां अधिक स्वायत्त तौर से कार्य कर सकेंगी।